सामाजिक विज्ञान शिक्षण का बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के साथ सम्बन्ध

सुनीता शर्मा

कोविड के बाद जब बच्चे स्कूल आए तो वे स्कूल में सीखी कई बातें भूल चुके थे। भूलने में पढ़ने-लिखने के बुनियादी कौशल भी शामिल थे। लेखिका ने इस लेख में कोविड के बाद कक्षा 6 के बच्चों के साथ किए गए काम को प्रस्तुत किया है। वे बताती हैं कि उनकी कक्षा 6 में 60 में से सिर्फ़ 3 बच्चे ऐसे थे जो स्वतंत्र रूप से पढ़-लिख सकते थे। बाक़ी बच्चों के साथ उन्हें अलग तरह से शुरुआत करनी पड़ी। प्रश्न यह था कि यदि पढ़ना-लिखना नहीं आता तो सामाजिक विज्ञान को कैसे पढ़ें? उन्होंने सभी बच्चों की क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें सीखने में मदद की और बच्चे जहाँ थे, उससे आगे भी बढ़े। -सं.

सन्दर्भ

कोविड के बाद स्कूल खुलने पर बच्चों के चेहरे शून्य जैसे प्रतीत होते थे। कई ऐसे बच्चे थे जिन्होंने इस महामारी के दौर में काफ़ी कुछ खोया था। किसी बच्चे के पिता का काम छिन गया था तो किसी ने अपने किसी परिजन या माता-पिता को खो दिया था। ऐसे बच्चे भी थे, जिन्होंने एक-एक सप्ताह तक भूख का मंज़र देखा था।

16 जून, 2022 को जब स्कूल खुले तो कक्षा 6 में कुल 120 बच्चों का दाख़िला हुआ। इसके A और B दो सेक्शन बनाए गए। एक सेक्शन में 60 बच्चे शामिल किए गए। इस कक्षा में पाठ्यपुस्तकों को केन्द्र में रखते हुए सामाजिक भावनात्मकता और कौशलों पर आधारित शिक्षण कार्य करने का प्रयास करना हमारा मुख्य लक्ष्य था।

इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए हम बच्चों से बातचीत करते रहे, कविता-कहानी सुनते-सुनाते रहे। नियमित तौर पर, 'अकड़ी-बकड़ी-तिकड़ी बम' और 'कोड़ा जमान खाए, पीछे देखे मार खाए' जैसे खेल खेलते रहे। बच्चे इससे सहज हुए, कक्षा में पूरे समय बैठने लगे और अपनी बातें कहने लगे। इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए मैं बच्चों से बातचीत के अंशों को ब्लैकबोर्ड पर लिखने लगी। इस लिखे हुए को बच्चों के साथ मिलकर मैं भी पढ़ती और बच्चों को भी ब्लैकबोर्ड पर पढ़वाने लगी। बच्चों से सवाल पूछने की शुरू हुई यह प्रक्रिया लगभग 15 दिन तक चली। 15 दिन बाद कुछ और चीज़ें कीं। मसलन, कक्षा की शुरुआत अन्त्याक्षरी, कविता, कहानी या फिर खेल से करना और उसे ही पढ़ने-लिखने का आधार बनाना। बच्चे जो कविता सुनाते, हम उसे बोर्ड पर लिख देते और फिर बारी-बारी से सबको पढ़वाते। इन सारी प्रक्रियाओं से यह अन्दाज़ा होने लगा कि बच्चों को पढ़ने में बहुत दिक़्क़त हो रही है।

जुलाई के दूसरे सप्ताह तक बच्चों के बारे में मेरा एक स्तर का आकलन हो गया था। 60 में से सिर्फ़ 3 बच्चे ही ऐसे थे, जिनको पढ़ना आ रहा था। बोर्ड पर मैं जो लिखती थी, ये बच्चे उसे पढ़ पाते थे। 15 बच्चे हिज्जेकर पढ़ पाते थे। बाक़ी 42 बच्चे एकदम शुरुआती स्थान पर थे और इनमें से 2 ने तो पहले सप्ताह में ही स्कूल आना बन्द कर दिया था। शेष 40 बच्चे भी बेहद अनियमित तौर

अध्याय 1

IETPCD

परस्पर निर्भरता

मनुष्य समाज में ही पलता–बढ़ता है और अपनी जरूरतों को पूरा करता है। समाज के बाहर रहकर वह अपनी बुद्धि का विकास भी नहीं कर सकता। इस बात को एक उदाहरण के द्वारा समझा जा सकता है।

निर्जन टापू पर मंगल

एक बार एक जलयान में कुछ लोग विदेश यात्रा पर निकले। लगभग एक सप्ताह बाद जब वे समुद्र में बहुत दूर निकल गए, तब अचानक भारी तूफ़ान आया। तूफान में जलयान समुद्र में डूब गया। साथ ही कई यात्री भी डूबकर मर गए, परंतु इनमें से एक व्यक्ति तैरना जानता था इसलिए वह बच गया। उसका नाम था मंगल।

मंगल कई घंटे तैरने के बाद एक निर्जन तट पर पहुँचा। वहाँ दूर–दूर तक उसे कोई गाँव या शहर नहीं मिला। वास्तव में वह समुद्र के बीच में एक टापू था। महीनों तक उसे इस निर्जन स्थान पर कंदमूल और फल खाकर अकेले रहना पड़ा। अकेले रहते–रहते वह पागल–सा हो गया। उसके कपड़े फट गए। वह बीमार भी पड़ गया। वह दिनभर समुद्र के किनारे अकेले घूमता रहता।

हमने देखा कि सिर्फ एक परिवार या गाँव के लोग ही एक दूसरे पर निर्भर नहीं है। बल्कि गाँव–शहर, राज्य तथा देश भी एक दूसरे पर निर्भर हैं। इन सबको एक दूसरे के साथ मिलकर जीवन बिताने के लिए कुछ तौर तरीके, नियम–कानून आदि मानने होते हैं।

पर कक्षा में आते थे। ये बच्चे ऐसे थे जिनको न तो अपना नाम लिखना आता था, न ही वे अपने नाम का कोई अक्षर पहचान पाते थे। यह चुनौती मुझे पहाड़ जैसी लगी, क्योंकि मैं सोच रही थी कि जब भाषा में यह स्थिति है तो सामाजिक विज्ञान एवं अँग्रेज़ी में क्या स्थिति होगी! सवाल यह था कि ऐसे में सामाजिक विज्ञान का शिक्षण कैसे किया जाएगा?

कार्यशाला से मिली राह

इसी बीच, मैं जुलाई 2022 में आयोजित 'नवा जतन' कार्यशाला में चार दिन शामिल हुई। कार्यशाला में इसपर विस्तार से चर्चा हुई कि भाषा विषय में स्तरानुसार शिक्षण की विधि क्या हो सकती है। एक ही कक्षा में मौजूद अलग-अलग क्षमताएँ रखने वाले बच्चों के साथ कैसे काम कर सकते हैं, यह मैं समझ पाई। मैं पहले से ही भाषा के माध्यम से सामाजिक विज्ञान की विषय-वस्तु को कक्षा शिक्षण में ले जाना चाहती थी लेकिन, जैसा कि मैंने पहले कहा, एक कक्षा में 60 बच्चे हैं जिनमें 40 ऐसे हैं जो पढ़ना-लिखना ही नहीं जानते (हालाँकि उन्होंने पहले कुछ-कुछ सीखा था, पर दो साल में वे काफ़ी कुछ भूल गए थे) तो उनके साथ कैसे काम करें, यह चुनौती थी!

सामाजिक विज्ञान के पाठ पर काम

जुलाई-अगस्त के महीनों में काम करने के बाद मैंने विषय को केन्द्र में रखते हुए बच्चों की बुनियादी दक्षताओं पर काम शुरू किया। मैंने सामाजिक विज्ञान विषय की कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक के पाठ

‘परस्पर निर्भरता और सार्वजनिक सम्पत्तियाँ’ को अपने काम के लिए चुना। मैंने ख़ुद तीन-चार बार इस पाठ को पढ़ा और यह लिंक तलाशना शुरू किया कि भाषा के साथ इस पाठ का संयोजन कैसे हो सकता है। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की एक सदस्य के सहयोग से मैंने इस पाठयोजना का निर्माण किया। इस पाठयोजना को हमने सप्ताह-केन्द्रित बनाया क्योंकि जुलाई और अगस्त के काम से मैं यह समझ गई थी कि विषय-वस्तु की समझ बनाने से लेकर, लिखने-पढ़ने के कौशल तक पहुँचने में समय और धैर्य दोनों की आवश्यकता होती है।

मेरा उद्देश्य था कि बच्चे इस पाठ के माध्यम से पाठ में शामिल मुद्दे के विश्लेषण में जाएँ, अपने तर्क प्रस्तुत करें, अपने परिवेश और अनुभवों से इस पाठ को जोड़ें और पढ़ना-लिखना भी सीखें।

बच्चों के स्तरानुसार समूह का डेटा एवं कॉपियों की फ़ोटो

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में भाषा शिक्षण की पैडागॉजी का इस्तेमाल करते हुए मैंने कक्षा में काम करना शुरू किया। हमने अपनी पहले की कक्षा में देखा था कि बच्चे कहानी सुनने और सुनाने में बहुत रुचि लेते हैं। इससे कक्षा में पूरे समय उनका जुड़ाव बना रहता है, वे आसानी से विषय-वस्तु समझ जाते हैं और मुद्दे को अपने जीवन के अनुभवों से जोड़ते हैं। इसलिए हमने भी अपनी कक्षा में विषय की शुरुआत के लिए कहानी को ही आधार बनाया।

हमारी कोशिश थी कि बच्चों को समय-समय पर स्तरवार समूह में काम करने के साथ-साथ मिक्स समूहों (पीयर समूह) में काम करने के अवसर दिए जाएँ, जिससे बच्चे आपस में अपने दूसरे साथियों के अनुभवों से भी सीख सकें। साथ ही, हम पाठ्यपुस्तक की विषय-वस्तु को बच्चों के आसपास के परिवेश से जोड़कर सवाल निर्माण करने में सहयोग देने और बच्चों को ख़ुद से सीखने के लिए प्रेरित करने की कोशिश कर रहे थे। हमारा यह भी प्रयास था कि कक्षा में ऐसे अवसर अधिक-से-अधिक पैदा किए जाएँ जहाँ बच्चे शिक्षक और बच्चों के बीच की भय जैसी धारणा को तोड़कर सहज होकर सीख सकें।

इसके लिए हमने कुछ गतिविधियों की योजना बनाई।

गतिविधियाँ

1. बच्चों को किताब के टेक्स्ट के अतिरिक्त सामाजिक सन्दर्भों के दूसरे टेक्स्ट के साथ गुज़रने के अवसर पैदा करना। मसलन, न्यूज़पेपर को सिर्फ़ देखना और जो ख़बर अच्छी लगी उसे मौखिक ही साझा करना, पुस्तकालय की किताबों के बड़े-बड़े चित्रों पर अपनी राय व्यक्त करना, किसी मुद्दे को चित्र के माध्यम से प्रस्तुत करना, आदि।

2. हर एक दिन किताब का वही पाठ खोलकर उसे देखना, उसके चित्रों का अवलोकन करना और अनुमान लगाकर अपनी कहानी बोलना।

एक गतिविधि के बारे में विस्तार से चर्चा

पाठ की शुरुआत कहानी के द्वारा की गई। हमने सबसे पहले बच्चों को मंगल की कहानी सुनाई जो एक टापू पर फँस गया था। यह कहानी तीन दिन चली। फिर तीन दिन तक शुरुआती स्तर के बच्चों, माने जो बिलकुल पढ़ नहीं पा रहे थे, को एक-एक कर मौखिक कहानी सुनाने का मौक़ा दिया। दूसरे स्तर के उन बच्चों, जो हिज्जे करके पढ़ते थे, को सुनी हुई कहानी के आधार पर बिना किताब देखे कहानी लिखने को कहा। तीसरे स्तर के बच्चों को सुनी हुई कहानी पर नाटक बनाने का काम दिया।

नाम - पूजा यादव
कक्षा - 8वीं
पाठ - 1 परस्पर निर्भरता
प्रश्न - 1 आप अपने परिवार के साथ रहते हैं। आपके परिवार में और कौन - कौन लोग रहते हैं। उनका नाम लिखिए।
2 आप कभी अकेले रहे हैं। ऐसी स्थिति में आपको क्या अनुभव हुआ।
3 हर व्यक्ति कई लोगों पर निर्भर है। आप किन - किन लोगों पर निर्भर हैं और क्यों।
4 किसान को फसल काटने पर मजदूर ना मिले तो क्या होगा।
5 आपके गाँव का लोहार काम करना बंद कर दे तो क्या होगा।
6 आपके गाँव में शहरों से क्या - क्या सामान मंगाया जाता है।
7 टापू पर मंगल के कपड़े क्यों फट गये।
8 मंगल क्यों परेशान हो गया।
9 बिमारी में उसका इलाज क्यों नहीं हो पाया
10 शहरों में गाँव से क्या - क्या सामान मंगाया जाता है।

चौथे दिन हमने दूसरे स्तर के बच्चों द्वारा लिखी कहानी को तीसरे स्तर के बच्चों को पढ़ने और उसपर नाटक बनाने के लिए दे दिया। शुरुआती स्तर के जो बच्चे हमारे साथ मौखिक कहानी सुना रहे थे, उन्हें दूसरे स्तर के बच्चों द्वारा लिखी गई कहानियाँ दी गईं। इनसे कहा गया कि इनमें से अनुमान लगाकर कुछ शब्दों को पहचानें और साथ ही कहानी को चित्र के माध्यम से बनाने की कोशिश करें। लगभग 6-7 बच्चे 2 से 4 शब्द प्रिंट के रूप में पहचान पाए। इन शब्दों में मंगल, टापू आदि शामिल थे। फिर हमने इन तीनों अलग-अलग समूहों को मिलाकर नए समूह बना दिए और कहा कि 'म' और 'ट' से इस कहानी में जितने शब्द आए हैं, उन्हें पहचानकर अपने समूह के सभी बच्चों को बार-बार बताओ और समझाओ। कक्षा के अन्त में जब हमने शुरुआती स्तर के बच्चों को किताब से शब्द पहचानने का काम दिया तो 17 बच्चे 5 से 6 शब्द पहचान पाए।

अगले तीन दिन की कक्षा के लिए हमने तय किया कि शुरुआती स्तर के बच्चों के साथ पढ़ना सिखाने के लिए ध्वनि व शब्द के जुड़ाव पर काम करेंगे। दूसरे स्तर के बच्चों के साथ उनके आसपास की किसी घटना का ज़िक्र करते हुए शब्द से वाक्य और वाक्य से अनुच्छेद बनाने व तीसरे स्तर के बच्चों के साथ स्वतंत्र लेखन पर काम किया जाएगा। हमने अपनी तय योजना के अनुसार काम शुरू किया। हमने बच्चों के अनुभवों पर सामूहिक चर्चा की। इस दौरान एक बच्चे ने बताया कि वह मेले में खो गया था और काफ़ी मुश्किलों से अपने माता-पिता से मिल पाया था। इसी तरह अन्य बच्चों ने भी अपने-अपने अनुभव साझा किए। अगले दिन हमने मंगल की कहानी से थोड़ा आगे बढ़कर एक देश की दूसरे देश पर निर्भरता को चर्चा में शामिल कर लिया। इसे हमने इस तरह से शामिल किया कि हमारे घर में चावल हैं लेकिन दाल नहीं, तो दाल कहाँ से लाएँगे। बच्चों ने

कहा, दुकान से। दुकानवाला कहाँ से लाएगा, बाज़ार से। बाज़ारवाला कहाँ से लाएगा, किसान से जो दाल उगाता है। हमारे गाँव के किसान दाल उगाते हैं तो दाल है, लेकिन गन्ना नहीं उगाते। हम चीनी कहाँ से लाएँगे, शहर से जहाँ चीनी दूसरी जगह से आती होगी। ये सारी बातें उनसे हुईं।

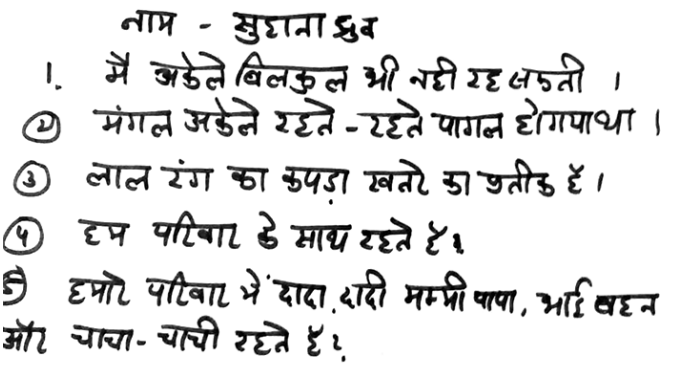

फिर बच्चों को किताब खोलकर आगे की कहानी को देखने का काम दिया। जो 3 बच्चे पढ़ सकते थे उन्हें आगे की कहानी को पढ़कर छत्तीसगढ़ में पैदा होने वाली वस्तुओं की सूची बनाने का काम दिया, मध्य स्तर के बच्चों को अपने गाँव की बाड़ी और आसपास के खेतों में होने वाली फ़सलों की सूची बनाने का काम दिया। शुरुआती स्तर के बच्चों के साथ कहानी में आगे दिए गए चित्रों पर चर्चा के लिए मैं समूह में बैठी। मैं बच्चों को चित्र दिखाती और पूछती कि चित्र में क्या हो रहा है या चित्र देखकर अनुमान लगाओ कि इस गाड़ी में क्या जा रहा होगा। अगले दिन हमने सभी बच्चों के अनुभवों को कक्षा में सामूहिक रूप से प्रस्तुत करवाया। इस छह दिन की कक्षा के बाद मैंने पाया कि शुरुआती स्तर के बच्चे चित्र को दिखा-दिखा कर अपनी बात को काफ़ी सहजता और आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत कर रहे थे। पाठ तो सभी बच्चे समझ गए थे लेकिन शुरुआती स्तर के बच्चों के साथ किया जाने वाला पढ़ने-लिखने का काम अभी शुरू भी नहीं हुआ था। बाक़ी के दो समूह (जिनमें 18 बच्चे थे) काफ़ी आगे बढ़ गए थे। मैंने अगले सप्ताह के लिए कोई नया पाठ नहीं चुना और इसी पाठ पर कुछ और टास्क करने की योजना बनाई।

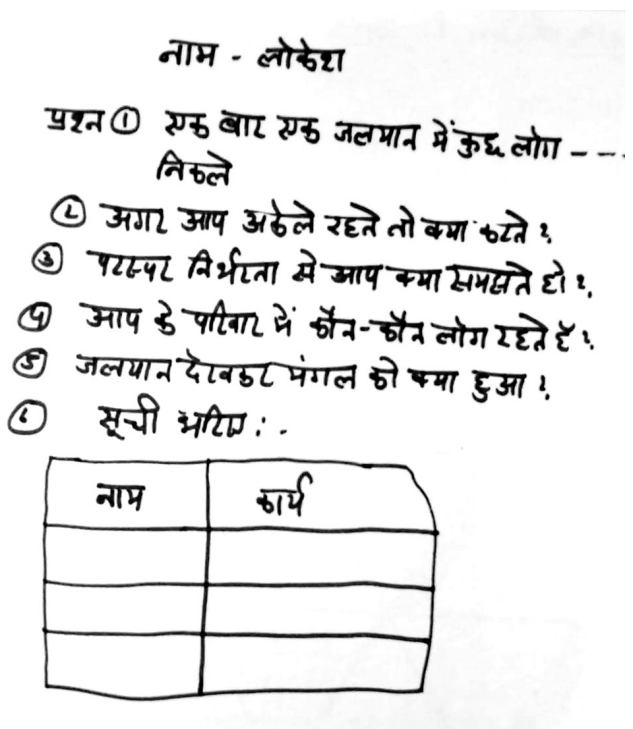

इस योजना में शामिल था कि कक्षा स्तर के बच्चे अपने राज्य की दूसरे राज्य के साथ लेन-देन की प्रक्रिया और सम्बन्ध को समझें, मध्य स्तर के सवाल बनाना सीखें और शुरुआती स्तर के बच्चे ध्वनि के आधार पर वर्णों को पहचानें, उनसे शब्द का निर्माण करना सीखें, न सिर्फ़ मौखिक बल्कि अपनी टूटी-

फूटी मात्राओं की ग़लतियों के साथ लिखना भी शुरू करें।

बच्चों के बनाए सवाल और उनके जवाबों के उदाहरण

इस लिहाज़ से हमने कुछ और गतिविधियों की योजना बनाई। इनमें पाठ से प्रतिदिन इमला बोलना और पाठ से सम्बन्धित परिवार, पड़ोसी, भाई-बहन जैसे शब्दों पर अपने मन से लिखने के अवसर देना शामिल था। जो बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान स्तर के थे वे उससे सम्बन्धित चित्र बनाते और उनके नाम लिखते। नाम में यदि त्रुटियाँ होतीं तो मैं उसका अभ्यास करवाती। त्रुटियों वाले शब्दों को ब्लैकबोर्ड पर लिख देती, बच्चे उनका अभ्यास करते। वे अपनी त्रुटियों को पहचानते भी और स्वयं से सुधारते भी।

ग्रेड स्तर और ग्रेड स्तर से नीचे के बच्चे जो स्वतंत्र रूप से लिखते, उसे कक्षा में चस्पा किया जाता और वे बच्चे बड़े समूह में उसे पढ़कर सुनाते। इससे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान वाले बच्चों को सुनने का मौक़ा मिलता। मेरा ध्यान रहता कि बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान वाले बच्चे पढ़ने वाले विषय पर ध्यान दे रहे हैं कि नहीं। मैं बार-बार बच्चों का ध्यान केन्द्रित करती थी। इस प्रक्रिया में कुछ बच्चे उसे प्रिंट के रूप में पढ़ने भी लगे। आगे बच्चों ने जिन शब्दों को प्रिंट के रूप में पढ़ना सीखा था, उन्हीं शब्दों से उन्हें वर्ण / मात्रा सिखाने का कार्य किया गया।

फ़िलहाल कक्षा 6 के सेक्शन A के 60 में से सिर्फ़ 6 बच्चे ऐसे हैं जिन्हें अभी भी पढ़ने में दिक़्क़त हो रही है और लिखने में मात्राओं की ग़लतियाँ बहुत ज़्यादा होती हैं। 42 बच्चे पैराग्राफ़ को धाराप्रवाह पढ़ पाते हैं और किसी शब्द को लेकर एक पैराग्राफ़ तक लिख भी देते हैं, लेकिन पुष्पांजलि, भार्गव, नीलकण्ठ, प्रतीक्षा जैसे कठिन शब्दों को पढ़ने और लिखने में उनको अभी भी थोड़ी दिक़्क़त होती है। 12 बच्चे ऐसे हैं जो काफ़ी बेहतर हैं। वे भाषा में पढ़ने-लिखने के साथ-साथ सामाजिक विज्ञान विषय में भी अपनी समझ को मॉडल के द्वारा गतिविधि में नाटक के माध्यम से प्रस्तुत कर पाते हैं।

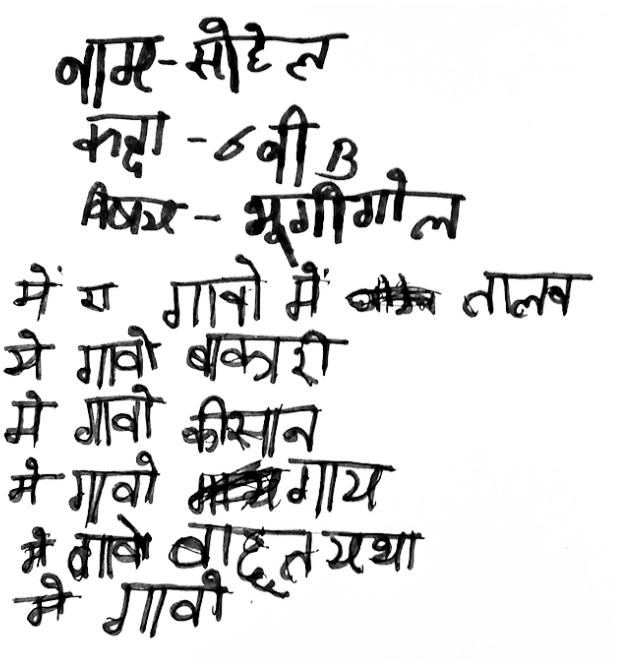

पहले से मेरा यह विश्वास था कि अगर बच्चे भाषा पढ़ना-लिखना सीख जाएँगे तो उनके लिए कोई भी विषय को पढ़ना आसान हो सकता है। मैंने जब काम की शुरुआत की तो प्रधानाध्यापिका का पूरा सहयोग था, लेकिन मेरे दूसरे साथी कहते कि मैडम विषय का सिलेबस कब पूरा करोगी। अभी मासिक टेस्ट होगा तो बच्चे सामाजिक विज्ञान में कविताएँ लिखेंगे क्या? कभी-कभी बहुत

ख़राब लगता था, लेकिन सन्तोष यह था कि कहने दो। मैं तो अपने-आप में सन्तुष्ट हूँ क्योंकि वास्तविकता को साथ लेकर चल रही हूँ, न कि एक शिक्षक होने के फ़र्ज़ से इतर बच्चों के ऊपर अपनी मर्ज़ी थोप रही हूँ। अन्ततः, मेरा विश्वास जीता और बच्चे सामाजिक विज्ञान में 'इतिहास के स्रोत' और दूसरे पाठ अपने-आप पढ़ने लगे। जब नवम्बर में 'परस्पर निर्भरता' पाठ पर हमने काम किया तब सिलेबस के आधार पर हम बहुत पीछे थे। यह मानते हुए गतिविधि के तौर पर सवाल निर्माण को इस शिक्षण विधि में शामिल किया था। इसके हमें काफ़ी बेहतर परिणाम देखने को मिले। इसमें सवाल बच्चों ने ख़ुद से बनाए और उनका विश्लेषण भी प्रस्तुत किया। आज मैं देखती हूँ, बच्चों के चेहरे पर एक अजीब ख़ुशी होती है जब वह सामाजिक विज्ञान की कक्षा में शामिल होते हैं। बच्चों ने सामाजिक विज्ञान के दूसरे पाठों को लेकर तमाम तरह के प्रोजेक्ट कार्य किए। 'इतिहास के स्रोत' पाठ के लिए गाँव का सर्वे कार्य किया, ख़ुद से सवाल बनाए एवं उनका विश्लेषण किया। 'जल संरक्षण' के प्रोजेक्ट में मॉडल के द्वारा प्रस्तुति की।

निष्कर्ष

सामाजिक विज्ञान विषय को अगर बच्चों के अनुभव एवं उनके परिवेश से जोड़ा जाए तो यह बच्चों को समाज के बारे में अपनी राय बनाने के अवसर देता है। फिर यह विषय बच्चों के अपने जीवन से जुड़ जाता है जिस कारण बच्चे इन सामाजिक पहलुओं पर आसानी से नाटक आदि बनाकर आत्मविश्वास के साथ जोड़ते हैं। वे एक समाज की परिकल्पना गढ़ने में सफल होते हैं और उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं का विश्लेषण भी कर पाते हैं। लेकिन इस जगह तक पहुँचने के लिए केन्द्र में बच्चों के बुनियादी पढ़ने-लिखने के कौशल को रखा जाना चाहिए। कक्षा की ऐसी प्रक्रिया से बच्चे साथी बच्चों से सीखते हैं, एक दूसरे का सहयोग करते हैं, अपनी बात को आत्मविश्वास के साथ रखने लगते हैं और अन्य बच्चों को भी प्रेरित करते हैं।

सुनीता शर्मा पूर्व माध्यमिक शाला चगोराभाटा पूर्व में अँग्रेज़ी विषय की शिक्षिका हैं। आप इतिहास में स्नातकोत्तर हैं और वर्ष 1998 से बच्चों को पढ़ा रही हैं। बच्चों के सीखने की चिन्ताओं को लेकर आप काफ़ी सक्रिय रहती हैं।

सम्पर्क : sunitavivek1976@gmail.com